शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2013

समकालीन भारत में दलित समाज पर बौद्ध धर्म का प्रभाव

नानक चन्द गौतम, शोधार्थी
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
ग्रेटर नोएडा उ.प्र.

शोध संक्षेप

गौतम बुद्ध ने समाज में निहित जाति व्यवस्था को समाप्त करने के लिए लोगों को समानताए स्वतन्त्रता और बंधुत्व का संदेश दिया। गौतम बुद्ध ही ऐसे महापुरुष थे जिन्होने सर्वप्रथम वर्णव्यवस्था को कड़ी चुनौती दी। यह कहना अतिशियोक्ति नही होगी कि बौद्ध धर्म के अन्दर दलितों को आत्मसम्मान मिला और यदि सभी वर्ग के लोग गौतम बौद्ध के विचारों और सिद्धांतों को आत्मसात कर ले तो निश्चय ही असमानता और हिंसा का निराकरण किया जा सकता हैं। डॉ.अंबेडकर मानते हैं कि वास्तविक धर्म समाज का आधार होता है।

प्रस्तावना

बौद्ध धर्म कोई आविष्कार नहीं है, बल्कि एक खोज है सच्चे धर्म, सामाजिक और सांस्कृतिक समानता की। बौद्ध धर्म ही वह धर्म है जिससे समाज और हिंदुस्तान में निहित विकृत मानसिकता को समाप्त किया जा सकता है, क्योंकि इसकी नींव समानता और मानवता पर आधारित है और उसका उद्देश्य शांति स्थापित करना और हिंसा को समाप्त करना सदैव रहा है और यही कारण है कि दलित समाज के लोग निरंतर बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से यह प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है कि क्या समकालीन भारत में दलित समाज पर बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखाई पड़ता हैं। अगर यह प्रतीत होता है कि प्रभाव पड़ रहा है, तो वे कौन से गुण हैं जिनसे दलित बौद्ध धर्म की तरफ परिवर्तित होते जा रहे हैं ।

भारतीय दलित बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हो रहे हैं, क्योंकि गौतम बुद्ध ने अपने धर्म को मध्यम मार्ग माना है। उन्होंने बताया कि हमें भोगविलास मे संलिप्त नही रहना चाहिए और एक रास्ता निकाला मध्यम मार्ग का जो कि आँख देने वाला, ज्ञान कराने वाला और शांति प्रदान करने वाला है। उन्होंने बताया कि तृष्णा मनुष्य की प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती है। यदि हम आकलन करें तो विदित होता है कि राजा राजाओं से लड़ते हैं, पिता पुत्र से, पुत्र पिता से और भाई-भाई से लड़ता हैं, इन सबका कारण है तृष्णा। समकालीन भारत में देखा जाए तो यह प्रतीत होता है कि दलितों की प्रगति के मार्ग में तृष्णा सबसे बड़ी चुनौती है, लेकिन बौद्ध धर्म के विचार और सिद्धान्त तर्कशील नज़र आते हैं। गौतम बुद्ध ने कहा था कि संसार में जन्म के आधार पर कोई भी मनुष्य उच्च या निम्न नही होता बल्कि अपने शुद्ध कर्मों से मनुष्य समाज में अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित करता है। हिंसा का मार्ग अपनाने से मनुष्य विनाश की ओर अग्रसर

होता है इसीलिए विनाश से बचने के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाया जाए तो देश, समाज और परिवार में बंधुत्व की छाप देखने को मिल सकती है। उन्होंने लोगों को यह शिक्षा दी कि नैतिक नियम के समक्ष जाति महत्तवपूर्ण न होकर सभी मनुष्य समान हैं।

गौतम बुद्ध ने मनुष्य को सर्वोपरि माना है। जिस प्रकार से गंगा, यमुना, सरयु और माही जैसी नदियां समुन्द्र में मिलने पर अपना अस्तित्व खो देती हैं, ठीक उसी प्रकार संघ में आने पर सभी जातियाँ अपनी पहचान खो देती हैं। उन्होंने मनुष्य के कल्याण के लिए संदेश दिया कि सदगुण, ज्ञान और कर्म ही प्रगति के एकमात्र मापदंड हैं। गौतम बुद्ध का यह विचार अत्यंत ही प्रासंगिक नज़र आता हैं कि घास, पेड़, मछली और जानवर आदि में विभिन्न जातियाँ पाई जाती है लेकिन मनुष्य कि केवल एक ही प्रजाति है। यही कारण है कि दलित समुदाय बौद्ध धर्म को अंगीकार कर रहे हैं।

बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है जिसके बारे में कोई भी व्यक्ति अनभिज्ञ नहीं है। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया जिसने अहिंसा को हथियार बनाकर हिंसा और अंधकार के रास्ते को सदैव के लिए त्याग दिया। दलितों के घर में हिन्दू देवी-देवताओं राम, कृष्ण, मीरा, शिव की तस्वीरों के साथ बुद्ध की तस्वीरें भी देखने को मिल जाती हैं। इससे यह पता चलता है कि दलितों में बौद्ध धर्म की चिंगारी आज भी किसी न किसी रूप में अपनी पकड़ बनाए हुए है और क्यों न हो। बौद्ध धर्म ही ऐसा धर्म था जहां दलितों को सम्मान और आत्मसम्मान मिला।

डॉ. अंबेडकर जी ने 14 अक्तूबर 1956 में हिन्दू धर्म को त्यागकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया क्योंकि वे जानते थे कि उन्होंने हिन्दू धर्म में जन्म तो लिया है परन्तु यह धर्म उन पर और उनके समाज पर थोपा गया है, लेकिन उनका कहना था मैं हिन्दू समाज में पैदा अवश्य हुआ हूँ लेकिन हिन्दू के रूप में नहीं मरूँगा। इसीलिए डॉ. अंबेडकर का कहना था कि भारत मेरा देश नहीं हैं और न ही हिन्दू हमारा धर्म है। इन सभी विभिन्नताओं और विषमताओं को देखते हुए डॉ. अंबेडकर ने बौद्ध धर्म को ग्रहण करके एक नई अलख जगाई क्योंकि बौद्ध धर्म समानता, स्वतन्त्रता और भाईचारे पर आधारित है। इस धर्म में सभी के साथ समान व्यवहार किया जाता है। अहिंसा एक ऐसा शस्त्र है जो मानव जीवन को सुखमय बनाता है और आज इस सिद्धान्त को समाज के विकास के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि अगर उपजातियों में विभाजित दलित समुदाय बौद्ध धर्म अपना ले तो समाज के अत्याचारों और शोषण की घटनाओं से बचा जा सकता है।

बौद्ध धर्म का प्रभाव दलित समाज के लेखकों पर भी पड़ा और २ मार्च 1958 को पहला सम्मेलन हुआ और इसे बौद्ध साहित्य के स्थान पर दलित साहित्य का नाम दिया गया, क्योंकि दलित लेखक जानते थे कि बौद्ध साहित्य का नाम परिवर्तित करना चाहिए, जिससे दलितों के अन्दर एक चेतना जागृत हो। बौद्ध धर्म के कारण दलितों को एक नया मार्ग मिला, जिससे यह प्रतीत होता है कि दलित समाज के लेखक भी बौद्ध धर्म से अछूते नहीं रहे है।3

उत्तर प्रदेश में गौतम बुद्ध जी की प्रतिमाओं को स्थापित कराना, ध्यान केंद्र बनवाना, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय बनवाना, गौतम बुद्ध नगर जिले की नींव रखना, गौतम बुद्ध के नाम से द्वार बनवाना, पंचशील नगर और प्रबुद्ध नगर के नाम से नगरों की स्थापना और पंचशील बालक इंटर कालेज का नामकरण करना ये सभी इस बात के जीते जागते प्रमाण हैं कि बौद्ध धर्म भारत में दलित के दिलों और दिमाग पर आज भी अपनी छाप किसी न किसी रूप में छोड़े हुए हैं।

आल इंडिया क्रिश्चियन सोसाइटी अल्बर्ट लायल के कथन से पता चलता हैं कि गुजरात, उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्यप्रदेश से हजारों लोग पहुंचे और डॉ. उदितराज के कथनों से भी यह उल्लेखित होता है कि इस सम्मेलन में दलित जाति के हजारों लोगों ने हिन्दू धर्म को त्यागकर बौद्ध धर्म अपना लिया और अल्बर्ट लायल के विचारों से पता चलता हैं कि नागपुर की रैली में हजारों लोगों ने बौद्ध धर्म अपनाया और आंध्र प्रदेश में भी दलितों की एक रैली हुई जिसमें काफी लोगों ने धर्म परिवर्तन किया । यह इस बात की ओर संकेत करता हैं कि आज भी दलितों के अन्दर बौद्ध धर्म को लेकर कहीं न कहीं कोई न कोई चिंगारी छिपी हुई हैं।4 मुंबई में डॉ. अंबेडकर के बौद्ध धर्म परिवर्तन के ५० साल पूरे होने के अवसर पर ३५ हज़ार लोग एकत्रित हुए जिनमे से हजारों दलितों और आदिवासियों ने हिन्दू धर्म को त्यागकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया।5 क्योंकि भारत में दलितो का शोषण सामाजिक रूप से हुआ है न कि आर्थिक रूप से इसीलिए जाति व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था से बाहर निकलकर ही आत्मसम्मान की प्राप्ति की जा सकती हैं और उदित राज का यह कथन अत्यंत ही सत्य प्रतीत होता है कि दलितों को इज्जत तभी मिलेगी जब वे मौजूदा सामाजिक व्यवस्था से बाहर निकलेंगे। इसीलिए दलित और आदिवासी बौद्ध धर्म अपना रहे हैं और बौद्ध धर्म ही ऐसा मार्ग है जहां पर बकरी और भेड़िया एक घाट पर पानी पीते हैं।6

गुजरात के वडोदरा विश्व संघ धर्मांतरण के कार्यक्रम में 3 हज़ार दलितों ने हिन्दू धर्म त्यागकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया, जिसमें से कुछ महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे।7 यह इस ओर संकेत करता है कि सभी दलित धर्म परिवर्तन कर लें तो हो सकता है कि दलित समुदाय समाज और नगर में समानता प्राप्त कर सके। 1961 से पहले दलित बौद्धिष्टों की संख्या 1,80,823 थी लेकिन उसके बाद 32,50,227 दलितों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया। इसीलिए यह सर्व विदित है कि दलित हिन्दू धर्म को त्यागकर बौद्ध धर्म को अपना रहे हैं। 1971 की जनगणना के अनुसार यह पता चलता हैं कि 38,12,325 दलितों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया और 1981 की जनगणना के अनुसार 47,19,796 दलित समाज के लोगों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया।8 अध्ययन करने के पश्चात यह विदित होता है कि किस तरह समकालीन भारत में दलित समाज पर बौद्ध धर्म का प्रभाव पड़ रहा है और किस तरह बौद्ध धर्म से दलित समाज आकर्षित हो रहा है और क्या कारण है कि दलित समाज बौद्ध धर्म की तरफ आकर्षित ही नहीं अपना भी रहे हैं और किस तरह हिन्दू धर्म का परित्याग कर रहे हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार 98,81,856 दलितों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया हैं जिसमें से

नवदलित बौद्धिस्ट 5,838,710 ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया है और इसके साथ साथ गुलबर्गा, नागपुर और पगवाड़ा में भी 4900 दलितों ने भी बौद्ध धर्म ग्रहण किया है और 2001 की जनगणना के अनुसार कर्नाटक में 3,93,300, उत्तर प्रदेश में 302,031, मध्य प्रदेश में 209,302, पंजाब में 41, 427 दलित समाज के लोगों ने हिन्दू धर्म को त्यागकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया गया ।9 मध्य प्रदेश में 1,13,365, उत्तर प्रदेश में 12 हज़ार 893, पंजाब में 14 हज़ार नौ सौ सत्तावन, मैसूर में 800 लोगों ने, गुजरात में 3 हज़ार दलित समाज के लोगों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया।10

बौद्ध धर्म ही पूर्णत वैज्ञानिक हैं। अगर दलित समाज सुख और शांति चाहता है तो उसे शील, समाधि और प्रज्ञा के मार्ग पर चलना होगा क्योंकि बौद्ध धर्म जीवन जीने की कला सिखाता है और गौतम बुद्ध जी ने कहा था मेरी बात को तर्क की कसौटी पर कसना सीखो, तर्कसंगत लगे तो स्वीकार करो और नहीं लगे तो छोड़ दो। दलित समाज बौद्ध धर्म में अपने जीवन जीने की कला खोजते हैं, क्योंकि वे कहते हैं कि हे मानव! अपने दीपक स्वयं बनो और अपने पतन के लिए मानव स्वयं जिम्मेदार है और किसी देवी-देवता के बल पर कोई भी मानव बड़ा नहीं बना है अपितु अपनी मेहनत से बना है, क्योंकि बुद्ध जी का केंद्र बिन्दु मानव रहा है।11

उपर्युक्त विवेचनों और तथ्यों के आधार पर यह विदित होता है कि बौद्ध धर्म में अंधविश्वास, जातिवाद और वर्ण व्यवस्था के लिए कोई स्थान नहीं हैं। बौद्ध धर्म उच्च आदर्श, समता, समानता और बंधुत्व के आधार पर दलित समाज को संगठित करने वाला एक मात्र धर्म हैं जो कार्य मूसा ने यहूदियों को संगठित करके एक कड़ी में पिरौने का कार्य किया, वही प्रभाव बौद्ध धर्म का दलित समाज पर देखने को मिल रहा है। जिस समय दलित समाज कभी कृष्ण, शिव और राम में अपना भला देख रहा था उस समय बौद्ध धर्म ही वह धर्म था जिसने दलित समाज को सम्मान दिया और एक मार्ग भी प्रशस्त किया।12 डॉ.अम्बेडकर बौद्ध धर्म को भौतिकवाद के साथ, वैज्ञानिक तार्किकता के साथ, संसदीय प्रजातन्त्र के साथ, समानता, स्वतन्त्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों तर्कसंगत मानते हुए प्रतीत होते हैं।

उपसंहार

बौद्ध धर्म वह धर्म है जो समानता का मार्ग प्रशस्त करता है। भारत में दलितों के शोषण और अन्याय की घटनाओं को रोकने के लिए बौद्ध धर्म का विस्तार करने की भी जरूरत है। क्योंकि श्रीलंका, जापान और थाईलैंड आदि ऐसे देश हैं जहां बौद्ध धर्म आज भी अपना अस्तित्व बनाये हुए है। भारतीय दलित बौद्ध धर्म की ओर अग्रसर हो रहे है। बौद्ध धर्म से समाज में निहित अस्पृश्यता, जातिवाद, दुष्कर्म और युद्धों से बचा जा सकता है, जिससे समाज में समरसता की भावना जाग्रत की होगी।

सन्दर्भ

1 विद्यालंकार सत्यकेतु, प्राचीन भारत, नई दिल्ली.सरस्वती सदन, १९९४

2 सराओए के. टी. एस., प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म उत्थान, स्वरूप और पतन, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, २००४

3 लिंबाले शरण कुमार, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशनर, नई दिल्ली

4 बीबीसी हिन्दी.काम, 14 ओक्टूबर, 2006

5 बीबीसी हिन्दी.काम, 14 ओक्टूबर, 2006

6 बीबीसी हिन्दीण्कॉमए 14 ओक्टूबरए 2006

7 3 हज़ार दलितों के द्वारा बौद्ध धर्म ग्रहण करना, नवभारत टाइम्स, 5 अक्तूबर, 2003

8 Pandayan, Dr. K.David, 2009, Dr. Ambedkar and the dynamic of Neo Buddhism, Gyan prakash publication, New Delhi

9 R.P.N, Swami, 2010, Dalits and Neo Buddhist Movements in india, 3 Vol.1, M.D.Publication, New Delhi

10 R.P.N, Swami, 2010, Dalits and Neo Buddhist Movements in india, 3 Vol.1, M.D.Publication, New Delhi

11 सिंह रघुवीर 2000 डॉ अंबेडकर और दलित चेतना, कमनी प्रकाशन, नई दिल्ली

12 दास भगवान 2007, बाबा साहब और भंगी जातियाँ, पेज़ 54 गौतम प्रकाशन, दिल्ली